शब्दों का गौरव

आद्या गोस्वमी, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल
वसुंधरा सैक्टर 1, कक्षा 10सी

विश्व-बाजार के युग में कक्षा 10 का अनंत अपने आप को वैश्विक नागरिक कहता था। उसके शब्दकोश में कूल, ट्रेंड और वाइब जैसे शब्दों ने अनुपम, उत्सव और संस्कृति को विस्थापित कर दिया था। हिन्दी बोलने में उसे संकोच होता था, मानो वह किसी पिछड़ेपन का प्रतीक हो। 14 सितंबर का दिन था। विद्यालय के सभागार में हिन्दी दिवस समारोह का आयोजन था। अनंत अनमने मन से बैठा था। तभी मंच पर 85 वर्षीय स्वतंत्रता सेनानी, सरस्वती देवी को आमंत्रित किया गया। उनके हाथ काँप रहे थे, पर स्वर दृढ़ था। सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में जब अँग्रेजों ने हम पर गोलियाँ चलाईं, वह बोलीं, तब हम इंकलाब ज़िंदाबाद के नारे हिन्दी में लगाते थे। जेल की दीवारों पर हमने कोयले से वन्दे मातरम् हिन्दी में लिखा था। भाषा केवल संवाद का माध्यम नहीं होती, वह अस्मिता का शंखनाद होती है।

उन्होंने अपनी झोली से एक जर्जर-सी चिट्ठी निकाली, यह मेरे पति का अंतिम पत्र है, जो उन्होंने फाँसी से पहले लिखा था। आप सुनोगे? सभागार निशब्द हो गया। सरस्वती देवी ने पढ़ा: प्रिये, मैं जा रहा हूँ, पर दुखी मत होना। मेरा शरीर मिट जाएगा, पर जब तक इस देश में कोई किसान अपना दुख कहेगा, कोई माँ अपने बच्चे को लोरी सुनाएगी तब तक मैं अमर रहूँगा क्योंकि माँ की लोरी और किसान का दर्द हिन्दी भाषा में ही तो होगा। अगर भाषा मर गई तो केवल मनुष्यों का समूह बचेगा, राष्ट्र की आत्मा नहीं।

अनंत के नेत्र सजल हो गए। उसे अपने पिता के शब्द याद आए, जो हमेशा कहते थे, बेटा, अँग्रेजी सीखना बुद्धिमत्ता है, पर अपनी भाषा भूलना कृतघ्नता है। उसी क्षण उसने निश्चय किया कि अब वह हिन्दी को अपनाएगा। अगले दिन उसने प्रार्थना सभा में हिन्दी दिवस पर सम्बोधन दिया। उसने कहा, 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा ने हिन्दी को राजभाषा के रूप में अंगीकार किया। यह केवल एक प्रांत की नहीं, समस्त भारत को एक सूत्र में पिरोने वाली भाषा का सम्मान था। आज जब हम एआई और कोडिंग की बात करते हैं, तब भी हिन्दी में सोचना हमें मौलिक बनाता है। विकास के पथ पर दौड़ते हुए यदि हम अपनी जड़ों को भूल जाएँ, तो हम बिना नींव की इमारत बन जाएँगे।

उस दिन अनंत ने समझा कि हिन्दी दिवस केवल उत्सव नहीं, उत्तरदायित्व है। यह आत्ममंथन का अवसर है कि हम अपनी समृद्ध साहित्यिक विरासत, प्रेमचंद की वास्तविकता, निराला के क्रांति-स्वर और दिनकर की ऊर्जा को कितना सहेज पा रहे हैं।

शिक्षा: भाषा भी राष्ट्र की आत्मा है। हिन्दी को अपनाना पिछड़ापन नहीं, अपनी संस्कृति, अपने इतिहास और अपने स्वाभिमान के प्रति निष्ठा है। वैश्वीकरण के दौर में हिन्दी ही वह सेतु है जो हमें हमारी मिट्टी से जोड़ती है। जी टी

ईर्ष्या पर धैर्य की जीत

विवान कुमर, ऐमिटी ग्लोबल स्कूल,
गुड़गाँव, कक्षा 7

माधव कक्षा सात का होनहार छात्र था। हर क्षेत्र में वह मेहनत और लगन से सबका ध्यान आकर्षित कर लेता था। माधव की सबसे बड़ी विशेषता थी- उसका दयालु स्वभाव। वह हमेशा अपने सहपाठियों की मदद के लिए तत्पर रहता था। इसी कारण, एक दिन विद्यालय का 'बेस्ट कक्षा प्रिफेक्ट' चुना गया।

जहाँ अधिकांश छात्र उसकी इस उपलब्धि से प्रसन्न थे, वहीं आर्यन और उसके कुछ मित्रों के मन में ईर्ष्या की भावना जन्म लेने लगी। उन्हें यह सहन नहीं हो रहा था कि माधव को इतनी सराहना और स्नेह मिल रहा है। धीरे-धीरे उनकी यह ईर्ष्या शरारत में बदल गई। वे माधव को चिढ़ाने लगे, कभी उसकी किताबें छिपा देते, कभी उसका मजाक उड़ाते, तो कभी उसे धक्का देकर हँसते। शुरूआत में माधव बहुत दुखी हुआ। उसे समझ नहीं आ रहा था कि बिना किसी गलती के उसे यह सब क्यों सहना पड़ रहा है, परंतु उसने हार मानने के बजाय धैर्य और समझदारी से काम लेने का निश्चय किया। एक दिन, जब आर्यन ने उसका रास्ता रोककर उसे फिर परेशान करने की कोशिश की, तब माधव ने घबराने के बजाय शांत और दृढ़ स्वर में कहा, 'आर्यन, मुझे 'बेस्ट कक्षा प्रिफेक्ट' इसलिए नहीं चुना गया कि मैं सबसे श्रेष्ठ हूँ, बल्कि इसलिए कि मैं सभी की मदद करने का प्रयास करता हूँ। यदि तुम्हें किसी बात से परेशानी है तो हम मिलकर उसे सुलझा सकते हैं। लेकिन इस तरह चिढ़ाने से न तुम्हें कुछ मिलेगा, न मुझे।'

माधव के इन शब्दों में न तो क्रोध था, न अहंकार, सिर्फ सच्चाई और आत्मविश्वास था। उसकी शांति और साहस ने जैसे माहौल ही बदल दिया। आर्यन स्तब्ध रह गया। उसके मन में पहली बार अपनी गलती का एहसास हुआ। अन्य छात्रों ने भी माधव का समर्थन किया।

धीरे-धीरे आर्यन ने अपनी गलती स्वीकार की और माधव से माफी माँगी। उस दिन माधव ने केवल एक प्रिफेक्ट होने का कर्तव्य नहीं निभाया, बल्कि एक सच्चे नेता होने का परिचय दिया। धैर्य, शांति और सद्भाव से किसी का भी हृदय बदला जा सकता है। जी टी

छोटी रोशनी, बड़े हौसले

साराह सरवर, एमिटी इंटरनेशनल स्कूल
सैक्टर 43, गुरुग्राम, कक्षा 6

जिया एक छोटे से गाँव में रहती थी। उसके परिवार के पास ज्यादा पैसे नहीं थे लेकिन उसके दिल में एक बड़ा सपना था। वह पढ़-लिखकर कुछ अच्छा करना चाहती थी। हर सुबह वह जल्दी उठती थी। घर के कामों में माँ की मदद करती और फिर तैयार होकर स्कूल के लिए निकल जाती। जिया के हौसले उसे ये सब करने के पंख देते ।

जिया अपने शिक्षकों की बातें ध्यान से सुनती थी और सब कुछ समझने की कोशिश करती थी। एक दिन शिक्षक ने विद्यार्थियों से पूछा कि वे भविष्य में क्या बनना चाहते हैं? किसी ने कहा- डॉक्टर, किसी ने पुलिस अधिकारी और किसी ने शिक्षक बनने की बात कही। जिया ने कहा, "मैं बस पढ़ना और नई-नई चीजें सीखना चाहती हूँ।" कई बच्चे उस पर हँसे, लेकिन शिक्षिका मुस्कुराईं, क्योंकि वह जानती थीं कि सबसे सरल सपने ही सबसे अच्छे होते हैं।

रात में जब सब लोग आराम कर रहे होते थे, बिजली नहीं होती थी, जिया अपनी किताबें लेकर घर के पास एक स्ट्रीटलाइट के नीचे बैठकर पढ़ती थी। कई लोग उसे देखकर उस पर गर्व करते और कई उसे चिढ़ाते, उसका मजाक उड़ाते और कहते, तुम क्यों पढ़ रही हो? इससे तुम्हारा भविष्य नहीं बदलेगा। जिया बस मुस्कुराती और अपनी पढ़ाई जारी रखती थी। दिन बीते और उसने परीक्षा में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया। जब शिक्षक ने परिणाम घोषित किया, तो पूरा कमरा यह सुनकर एकदम शांत हो गया कि जिया पूरे राज्य में प्रथम आई थी। जिया बहुत खुश थी । उसकी सारी मेहनत, स्ट्रीट लाइट के नीचे बिताई गई वे सारी रातें आखिरकार रंग लाईं। जो छात्र उस पर हँस रहे थे, जो गाँव वाले उसे चिढ़ा रहे थे, अब सब ताली बजा रहे थे। फिर शिक्षक ने उसे मंच पर बुलाया और कहा, आज जिया ने हमें दिखाया है कि एक छोटी सी रोशनी भी हमें सफलता तक ले जा सकती है। जिया मुस्कुरा रही थी। वह जानती थी कि उसकी यात्रा अभी शुरू हुई है लेकिन उसने एक बात साबित कर दी थी कि हौसले अगर सच्चे हों तो छोटी रोशनी भी सूरज बन जाती है। जी टी

अंतिम सिक्का

रेयांश गुप्ता, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल,
नवी मुंबई, कक्षा 6

अर्जुन की जेब में एक ही सिक्का था और घर में बीमार माँ उसकी राह देख रही थी। रास्ते में उसे पैसों से भरा थैला मिला। थैला देखकर अर्जुन खुशी से उछल गया। उसने सोचा इतने पैसे, अब माँ की दवा ले लूँगा। पर अगले ही पल उसके अंतर से एक आवाज आई- किसी की ज़िंदगी भी तो इसी में होगी। एक पल में सब बदल सकता था, अर्जुन ने अपने अंतर की आवाज सुनी और थैले को पुलिस चौकी में दे आया। वहाँ उसे पता चल कि वे पैसे एक मजदूर के थे। उसने वे पैसे अपनी बेटी की सर्जरी के लिए दिन-रात मेहनत करके इकट्ठा किए थे। अर्जुन बिना दवा लिए रात को घर पहुँचा तो माँ ने पूछा, 'दवा'?

अर्जुन बोला, 'नहीं ला पाया माँ... पर किसी की साँसें बचा दीं। इसके बाद उसने पैसे से भरा थैला मिलने की बात माँ को बताई।

सुनकर माँ की आँखें भर आईं। माँ ने कहा, बेटा! आज तू सबसे अमीर है। धन से नहीं, पर दिल और दयालुता से। जी टी

कभी हार न मानना

नमामी तिवारी, ऐमिटी इंटरनेशनल स्कूल,
रायपुर, कक्षा 8 ए

एक लड़का रायपुर के एक छोटे से गाँव में रहता था। उसका सपना था कि वह बड़ा होकर चित्रकार बने और अपनी सुंदर चित्रकारी से सबका दिल जीत ले। लेकिन उसके पास न अच्छे रंग थे और न ही महँगा सामान। वह पेड़ों की पत्तियाँ, मिट्टी और कोयले से ही चित्र बनाया करता था। गाँव के लोग उसकी कला देखकर हैरान हो जाते थे और कहते, 'यह लड़का एक दिन बहुत बड़ा कलाकार बनेगा।' कुछ लोग उसका मजाक भी उड़ाते थे लेकिन वह कभी हिम्मत नहीं हारता था।

एक दिन उसने शहर जाकर अपनी चित्रकारी दुकानदार को बेच दी। लड़का बहुत खुश हुआ। उसने मिले हुए पैसों से अपने रंग, ब्रश और किताबें खरीदीं। उसने केवल अपने लिए ही नहीं, गाँव के बच्चों के लिए भी कॉपियाँ, पेंसिल और रंग खरीदे। जब वह गाँव लौटा, तो सभी बच्चे उसे घेरकर खड़े हो गए। लड़के ने बच्चों को सामान बाँटा और उन्हें चित्र बनाना सिखाने लगा। अपनी मेहनत, लगन और अच्छे व्यवहार से वह एक सफल कलाकार बना।

शिक्षा: कभी भी हार नहीं माननी चाहिए। मेहनत से हर सपना पूरा किया जा सकता है। जी टी